नवोन्मेष
रुक्टा (राष्ट्रीय)

राजस्थान विश्वविद्यालय एवं महाविद्यालय शिक्षक संघ (राष्ट्रीय)
(अखिल भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ से संबद्ध)

website: www.ructarashtriya.org **Email:** info@ructarashtriya.org, ructarashtriya@gmail.com

केन्द्रीय कार्यालय	:	देराश्री शिक्षक सदन, राजस्थान विश्वविद्यालय परिसर, जयपुर-302004
प्रधान कार्यालय	:	सम्राट पृथ्वीराज चौहान राजकीय महाविद्यालय, अजमेर-305001 (राज.)
अध्यक्ष	:	डॉ. दिग्विजयसिंह शेखावत, बीकानेर मो. 9414452369, 9983007575
महामंत्री	:	डॉ. नारायणलाल गुप्ता, अजमेर मो. 9414497042

परिपत्र क्रं. : रुक्टा (रा.)/2017-18/01 आषाढ़ शु. १४ वि. स. २०७४ तदनुसार 07 जुलाई, 2017
(सभी इकाई सचिवों एवं सक्रिय सदस्यों को समस्त सदस्यों में प्रसारित करने के अनुरोध सहित प्रेषित)

प्रिय बंधु/भगिनी,

सादर नमस्कार।

नवीन शैक्षणिक सत्र 2017-18 की बहुत-बहुत शुभकामनाएँ। ईश्वर से प्रार्थना है कि यह शैक्षणिक सत्र हम सब के लिए, शिक्षा से जुड़े प्रत्येक घटक के लिए, सम्पूर्ण राष्ट्र एवं विश्व के लिए ज्ञान एवं कर्म के नवीन आयामों को छूने का मार्ग प्रशस्त करे। पिछले परिपत्र के पश्चात् मुख्यमंत्री द्वारा पदनाम परिवर्तन की अधिसूचना के प्रारूप की स्वीकृति, उच्च शिक्षामंत्रीजी एवं मानव संसाधन विकास मंत्रीजी से भेंट, विभिन्न शिक्षक समस्याओं पर प्रगति एवं संगठन के प्रयासों की जानकारी, विचार वर्ग, विस्तृत कार्यकारिणी बैठक सहित अन्य सांगठनिक-वैचारिक कार्यक्रमों की रिपोर्ट के साथ यह परिपत्र आपके समक्ष प्रस्तुत है -

शिक्षक समस्याओं के संबंध में संगठन की गतिविधियाँ एवं उपलब्धियाँ

1. **पदनाम परिवर्तन की अधिसूचना के प्रारूप को मुख्यमंत्रीजी द्वारा स्वीकृति** - संगठन के अथक प्रयासों के फलस्वरूप अंतत: गत 10 व 11 जनवरी को जयपुर में आयोजित संगठन के प्रान्तीय अधिवेशन के उद्घाटन सत्र में मुख्यमंत्री श्रीमती वसुन्धरा राजे जी ने महाविद्यालय शिक्षकों के पदनाम परिवर्तन की घोषणा की थी। उक्त घोषणा को मूर्त रूप देते हुए गत 17 मई को मुख्यमंत्रीजी ने राजस्थान शैक्षणिक सेवा (महाविद्यालय शाखा) संशोधन नियम - 2017 की अधिसूचना के प्रारूप को मंजूरी प्रदान कर दी है। इस प्रारूप के अनुसार महाविद्यालय शिक्षकों के पदनाम असिस्टेंट प्रोफेसर, एसोसिएट प्रोफेसर एवं प्रोफेसर होंगे। मुख्यमंत्रीजी ने स्नातकोत्तर महाविद्यालयों में प्रोफेसर के 437 पद एवं स्नातक महाविद्यालयों में प्रोफेसर के 40 पद सृजित करने की भी मंजूरी दी है। प्रारूप के अनुसार प्रोफेसर के सभी पद एसोसिएट प्रोफेसर के पद से कॅरियर एडवान्समेंट स्कीम के तहत भरे जाएंगे। संगठन इस संबंध में शीघ्र ही नियम जारी करवाने हेतु निरन्तर प्रयासरत है।

2 **महाविद्यालय शिक्षक कुलपति पद हेतु पात्र** - संगठन के सतत् प्रयासों के परिणामस्वरूप गत 24 अप्रेल को विधानसभा में महाविद्यालय शिक्षकों को भी विश्वविद्यालय कुलपति पद हेतु पात्र मानने का संशोधन विधेयक पारित कर दिया गया है। इस विधेयक में कुलपति पद पर रिक्ति होने की स्थिति में चार्ज प्रशासनिक अधिकारी को न देकर शिक्षाविद को ही दिये जाने का प्रावधान भी किया गया है। उल्लेखनीय है कि संगठन को जानकारी मिली थी कि सरकार एक ऐसे विधेयक को विधानसभा से पारित करवाने जा रही है जिससे केवल विश्वविद्यालय के शिक्षक, जिन्हें प्रोफेसर पद पर 10 वर्ष का न्यूनतम अनुभव है, को ही कुलपति पद के लिये पात्र माना जायेगा। संगठन को पता चलते ही 29 मार्च 2017 को उच्च शिक्षा मंत्री श्रीमती किरण माहेश्वरीजी से भेंट कर इस विषय को लेकर विरोध जताया था। संगठन ने मंत्री महोदय को बताया था कि महाविद्यालय शिक्षकों के पदनाम परिवर्तन की प्रक्रिया जारी है तथा इसमें मुख्यमंत्रीजी की घोषणा के अनुसार प्रोफेसर पदनाम देना भी शामिल है, ऐसी स्थिति में प्रस्तावित विधेयक

महाविद्यालय शिक्षकों के साथ अन्यायपूर्ण है क्योंकि कार्य के प्रकार में विश्वविद्यालय एवं महाविद्यालय शिक्षकों में कोई अन्तर नहीं है। संगठन ने मंत्रीजी के ध्यान में यह विषय भी दिलाया था कि प्रस्तावित विधेयक में कुलपति पद पर रिक्ति होने की दशा में किसे कार्यभार किसे दिया जाये इसका स्पष्ट प्रावधान नहीं है। प्रशासनिक अधिकारी को चार्ज देने का संगठन तथ्यों एवं तर्कों के आधार पर सदैव विरोध करता रहा है, अत: विधेयक में इस बात के स्पष्ट प्रावधान किये जाएं कि कुलपति पद पर रिक्ति होने की दशा में चार्ज शिक्षाविद को ही दिया जाये। मंत्रीजी ने विषय की गंभीरता को समझते हुए संगठन को विश्वास दिलाया था कि वे स्वयं इस विषय को मुख्यमंत्रीजी के समक्ष रख कर शिक्षकों की भावना के अनुरूप अपेक्षित संशोधन कराएंगीं। महाविद्यालय शिक्षकों के अकादमिक हितों एवं सम्मान की रक्षा के क्रम में विधेयक में अपेक्षित संशोधन करवाकर पारित करवाने के लिए संगठन उच्च शिक्षा मंत्रीजी का हार्दिक आभार व्यक्त करता है।

3. **उच्च शिक्षा मंत्री जी से भेंट** - संगठन के प्रतिनिधिमंडल ने 8 मई को उच्च शिक्षा मंत्रीजी से विस्तृत भेंट-वार्ता की। वार्ता में आयुक्त कॉलेज शिक्षा, अतिरिक्त आयुक्त कॉलेज शिक्षा, संयुक्त सचिव उच्च शिक्षा एवं आयुक्तालय के विभिन्न अधिकारी उपस्थित थे। बैठक में 30 जून 2013 के बाद पात्र शिक्षक साथियों को पे बैंड-4 देने, 30 जून 2015 तक वरिष्ठ एवं चयनित वेतनमान हेतु पात्र शेष रहे शिक्षकों की स्क्रीनिंग शीघ्र कराने, आर.वी.आर.ई.एस. शिक्षकों के सी.ए.एस. मामले को अनावश्यक रूप से न उलझाने, 5 अप्रेल 2010 के आदेशानुसार सृजित निदेशक अकादमी पद पर शिक्षक की नियुक्ति करने, यू.जी.सी. नियमानुसार सभी पात्र शिक्षकों को पूर्व सेवा का लाभ देने, शारीरिक शिक्षकों, पुस्तकालाध्यक्षों, प्रयोगशाला सहायकों एवं अन्य मंत्रालयिक कर्मचारियों के रिक्त पदों को शीघ्र भरने, पीएच.डी. हेतु कोर्स वर्क से छूट अथवा सवैतनिक अवकाश की व्यवस्था करने एवं पीएच.डी. वेतन वृद्धियों को पुन: प्रारम्भ करने, जनवरी 2006 से जून 2006 के मध्य ड्यू वेतन वृद्धि वाले शिक्षकों को एक अतिरिक्त वेतन वृद्धि देने, 1-1-1994 के बाद नियुक्त शिक्षकों की वरिष्ठता सूची जारी करने, महाविद्यालयों में प्रवेश प्रक्रिया को सरलीकृत कर कम अवधि में सम्पन्न करवाने, विखण्डित महाविद्यालयों की समस्याओं का समाधान करने आदि विषयों पर विस्तृत चर्चा हुई। बैठक में उच्च शिक्षा मंत्रीजी द्वारा सकारात्मक रुख अपनाते हुए सभी समस्याओं के निस्तारण हेतु अधिकारियों को निर्देश प्रदान किए। संगठन के प्रतिनिधिमंडल ने पुन: 28 जून को उच्च शिक्षा मंत्रीजी से भेंट कर पदनाम परिवर्तन के नियम व्यापक शिक्षक हित के अनुकूल रखते हुए शीघ्र जारी करवाने, लोक सेवा आयोग से चयनित अभ्यर्थियों को क्रमानुसार अविलम्ब नियुक्ति देने एवं शेष लम्बित समस्याओं के समाधान की प्रगति पर चर्चा की। मंत्रीजी ने लोक सेवा आयोग एवं आयुक्तालय के अधिकारियों से उसी समय फोन पर वार्ता की एवं कॉलेज शिक्षा के अधिकारियों को समस्याओं के निस्तारण में गति लाने हेतु कहा। विश्वास है कि संगठन के निरन्तर प्रयासों से आने वाले समय में समस्याओं का क्रमश: समाधान हो सकेगा।

4. **1 अप्रेल 1994 के बाद नियुक्त शिक्षकों की अंतरिम वरिष्ठता सूची का प्रकाशन** - संगठन लम्बे समय से 1 अप्रेल 1994 के बाद नियुक्त महाविद्यालय शिक्षकों की वरिष्ठता सूची प्रकाशित करने की माँग करता आ रहा था। 8 मई को उच्च शिक्षा मंत्री जी से हुई भेंट में मंत्रीजी द्वारा आयुक्तालय अधिकारियों को दिए निर्देशों के अनुरूप 15 मई 2017 को जारी आदेश द्वारा 1-4-1994 से 1-4-2007 के मध्य नियुक्त शिक्षकों की अंतरिम वरिष्ठता सूची का प्रकाशन कर दिया गया है। संगठन ने इस अंतरिम सूची पर प्राप्त प्रतिवेदनों के निस्तारण पश्चात शेष रहे शिक्षकों की भी वरिष्ठता सूची जारी करने की मांग की है।

5. **उपाचार्य पद पर पदस्थापन** - मार्च माह में संगठन के प्रयासों से सत्र 2016-17 हेतु स्नातक एवं स्नातकोत्तर प्राचार्य पद की डी.पी.सी. सूची (रिजर्व लिस्ट सहित) के अनुसार प्राचार्य पदों पर पदस्थापन कर दिया गया था किन्तु उपाचार्य पदों पर पदनाम परिवर्तन को दृष्टिगत रखते हुए पदस्थापन नहीं किया गया था। संगठन द्वारा इस विषय पर उच्च शिक्षा मंत्रीजी का ध्यान आकृष्ट करते हुए आग्रह किया गया कि जिन शिक्षकों की डी.पी.सी. उपाचार्य पद हेतु हो चुकी है उन्हें पदस्थापित कर उनके पदोन्नति अधिकार को प्रदान करें। मंत्रीजी ने इस विषय को समझते हुए तत्काल डी.पी.सी. के अनुरूप उपाचार्य पद पर पदस्थापन के निर्देश प्रदान किए। संगठन के प्रयासों से आयुक्तालय द्वारा 2 मई 2017 को सत्र 2016-17 हेतु उपाचार्य पद की डी.पी.सी. में शेष रहे 15 शिक्षकों के पदस्थापन आदेश प्रसारित कर दिये गए।

6. **मानव संसाधन विकासमंत्री श्री प्रकाश जावडेकरजी से भेंट** – अखिल भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ के संगठन मंत्री श्री महेन्द्रजी कपूर एवं महामंत्री श्री जे. पी. सिंघल के नेतृत्व में महासंघ के एक प्रतिनिधिमंडल ने 3 मई 2017 को दिल्ली में मानव संसाधन विकास मंत्री श्री प्रकाश जावडेकरजी से शिक्षा एवं शिक्षकों की विभिन्न समस्याओं को लेकर विस्तृत भेंटवार्ता की। वार्ता के मुद्दों में प्रमुख रूप से सातवें वेतन रिव्यू कमेटी की रिपोर्ट को शीघ्र ही केबिनेट बैठक में रख कर लागू करने, छठे वेतनमान की वित्तीय एवं अकादमिक विसंगतियों को दूर करने, विभिन्न शैक्षिक संस्थानों में मोबिलिटी सुनिश्चित करने हेतु पुरानी पेंशन योजना को लागू करने, शिक्षकों के रिक्त पदों को प्राथमिकता से भरने, सभी शैक्षिक संस्थानों में सेवानिवृत्ति आयु 65 वर्ष करने हेतु राज्य सरकारों को एडवाइजरी भेजने, एपीआई-पीबीएएस पद्धति का पुनः परीक्षण कर पदोन्नति हेतु व्यावहारिक एवं उचित व्यवस्था करने, अनुदानित संस्थाओं के शिक्षकों का वेतन डायरेक्ट डेबिट ट्रांसफर फेसिलिटी (डी.डी.टी.एफ.) द्वारा जमा करने, पूर्व सेवा का लाभ देने, शारीरिक शिक्षकों एवं पुस्तकालाध्यक्षों को शैक्षणिक स्टॉफ के तुल्य मानने, शिक्षा के नियमन हेतु पूर्णतः स्वायत्त एवं स्वतंत्र नियामक आयोग बनाने, मातृभाषा में प्रारंभिक शिक्षा देने, शिक्षा पर बजट में वृद्धि करने जैसे विषय शामिल थे। मंत्रीजी ने सकारात्मक रुख दिखाते हुए इन समस्याओं के चरणबद्ध समाधान हेतु सहमति दी। उन्होंने कहा कि सातवें वेतन रिव्यू कमेटी की रिपोर्ट शीघ्र ही केबिनेट में रखी जानी है। उन्होंने भरोसा दिलाया कि महासंघ की अपेक्षानुसार अन्य मांगों पर निकट भविष्य में अच्छे समाचार मिलेंगे।

7. **प्राचार्य पद की डी.पी.सी. प्रक्रिया प्रारम्भ** – संगठन लगातार राज्य सरकार से माँग करता आया है कि विभागीय पदोन्नति समिति की बैठक प्रतिवर्ष नियमित रुप से आयोजित की जाए जिससे शिक्षकों को उनका न्यायोचित अधिकार समय पर मिल सके। राज्य सरकार ने संगठन की इस माँग को गंभीरता से लिया है फलस्वरूप गत 3 वर्षों से समय पर शिक्षकों को पदोन्नति का लाभ मिल रहा है। इसी कड़ी में सत्र 2017-18 के लिए प्राचार्य पद हेतु विभागीय पदोन्नति समिति की बैठक आयोजित करने हेतु आयुक्तालय ने प्रक्रिया प्रारम्भ कर दी है।

8. **आर.वी.आर.ई.एस. शिक्षकों की अनुदानित सेवा अवधि के बकाया भुगतान की कार्यवाही** – संगठन ने राज्य सरकार से लगातार विभिन्न भेंटवार्ताओं एवं पत्रों द्वारा में आर.वी.आर.ई.एस. शिक्षकों की अनुदानित सेवा अवधि के बकाया (छठा वेतनमान एरियर, उपार्जित अवकाश नगदीकरण, उपादान राशि आदि) के भुगतान की माँग की है। इस विषय पर उच्च एवं उच्चतम न्यायालय से भी राज्य सरकार को आदेश प्राप्त हो चुके हैं। संगठन ने उच्च शिक्षा मंत्रीजी से राज्य सरकार द्वारा इस विषय को अकारण ही प्रतिष्ठा का विषय बनाकर आर.वी.आर.ई.एस. शिक्षकों के बकाया भुगतान को लम्बित नहीं करने की माँग की। राज्य सरकार द्वारा गत 28 जून को कई आर.वी.आर.ई.एस. शिक्षकों एवं कार्मिकों के छठे वेतनमान एरियर में राज्य सरकार का अंश जमा करवा दिया है। संगठन ने मंत्रीजी से संबंधित प्रबन्ध समितियों को उनकी हिस्सा राशि एवं उपादान राशि भी जमा कराने को बाध्य करने का आग्रह किया है। संगठन ने मंत्रीजी से शेष रहे आर.वी.आर.ई.एस. शिक्षकों तथा अनुदानित सेवा अवधि में सेवानिवृत्त शिक्षकों के बकाया हेतु राज्य सरकार की अंश राशि भी जमा करवाने की माँग की है।

9. **आर.वी.आर.ई.एस. शिक्षकों को कारण बताओ नोटिस व 16 सीसीए के तहत कार्यवाही का विरोध** – आयुक्तालय कॉलेज शिक्षा द्वारा आर.वी.आर.ई.एस. शिक्षकों द्वारा अनुदानित सेवा अवधि के बकाया की माँग करने को नियुक्ति हेतु वचनबद्धता का उल्लंघन मानते हुए कई शिक्षकों को कारण बताओ नोटिस जारी किया एवं कुछ शिक्षकों के विरुद्ध 16 सीसीए के तहत कार्यवाही प्रस्तावित की है। संगठन ने पत्र द्वारा एवं भेंटवार्त्ता में राज्य सरकार की उक्त कार्यवाही का विरोध किया तथा तथ्यात्मक जानकारी एवं दस्तावेजों द्वारा शिक्षकों की पूर्व सेवा के बकाया की माँग को न्यायोचित ठहराया। संगठन ने राज्य सरकार से प्रस्तावित 16 सीसीए कार्यवाही एवं कारण बताओ नोटिस प्रक्रिया को रोकने का आग्रह किया है।

10. **महाविद्यालय में आकस्मिक जाँच करने के लिए कनिष्ठ अधिकारी को अधिकृत करने का विरोध** – जिला कलेक्टर चित्तौड़गढ़ ने राजकीय पी.जी. महाविद्यालय, चित्तौड़गढ़ एवं राजकीय कन्या महाविद्यालय, चित्तौड़गढ़ में निर्धारित समय पर उपस्थिति एवं पाबंदी की आकस्मिक जाँच हेतु क्रमशः सचिव नगर विकास न्यास एवं उपवन संरक्षक चित्तौड़गढ़ को अधिकृत करने के लिए दिनांक 23 जून को आदेश जारी किए है। संगठन ने मुख्यमंत्रीजी को पत्र लिख कर वेतनमान एवं प्रोटोकॉल में कनिष्ठ अधिकारियों द्वारा महाविद्यालय प्राचार्य एवं शिक्षकों की उपस्थिति जाँच करने का पुरजोर विरोध किया है

एवं उक्त आदेश को वापस लेते हुए आवश्यकता होने पर प्रोटोकॉल अनुसार महाविद्यालय प्राचार्य के समकक्ष अथवा उनसे वरिष्ठ अधिकारियों द्वारा ही जाँच करवाने की मांग की है।

11. **अतिथि व्याख्याता के रूप में नियुक्त सेवानिवृत्त शिक्षकों के मानदेय भुगतान में प्रगति** – संगठन संविदा पर लगे शिक्षकों एवं सेवानिवृत्त शिक्षकों को समय पर मानदेय करने की माँग करता आया है। आयुक्तालय द्वारा इस क्रम में जिन सेवानिवृत्त शिक्षकों को भुगतान प्राप्त नहीं हुआ है, उसकी सूचना मांगी गई है ताकि अग्रिम कार्यवाही की जा सके।

सांगठनिक एवं वैचारिक गतिविधियाँ

1. **प्रदेश विचार वर्ग सम्पन्न** – महर्षि दयानंद सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर में दिनांक 9 से 11 जून 2017 तक संगठन का प्रदेश विचार वर्ग आयोजित किया गया, जिसमें देश के जाने-माने विद्वानों ने राष्ट्रीय महत्व के विषयों पर कार्यकर्त्ताओं का युक्तियुक्त मार्गदर्शन किया। वर्ग में प्रदेश के सभी जिले से आए 270 कार्यकर्ताओं ने भाग लिया।

सर्वप्रथम दिनांक 9 जून को सायं परिचय-सत्र सम्पन्न हुआ। परिचय-सत्र में प्रदेश संगठन मंत्री डॉ. ग्यारसीलाल जाट ने वर्ग की प्रस्तावना पर विस्तार से प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि देश इस समय चुनौतियों से घिरा हुआ है और विघातक शक्तियाँ इसे अस्थिर करने पर आमादा है। इस परिस्थिति में यदि शिक्षक उठ खड़ा नहीं हुआ तो निश्चय ही हमें गंभीर संकटों का सामना करना पड़ेगा। हमारा शिक्षक तन-मन-धन से राष्ट्र की सेवा में स्वयं को पूर्णतया समर्पित करने को तैयार है, लेकिन यह समर्पण वह किस विधि-प्रविधि से कर सकता है इस पर चिंतन मनन करने हेतु ही इस विचार-वर्ग की आयोजना की गई।

10 जून को प्रातः उद्घाटन सत्र में शिक्षाविद् एवं चिंतक श्री हनुमानसिंहजी राठौड़ ने राष्ट्रीय विषयों पर समाज में उत्पन्न भ्रम की स्थिति का विवेचन करते हुए मजहब, मत, पंथ, संप्रदाय, रिलीजन व धर्म शब्दों के अर्थ में प्रचलित भ्रान्त धारणाओं का निराकरण किया एवं इनका यथार्थ तात्विक निहितार्थ प्रस्तुत किया। उन्होंने बताया कि भारतीय संस्कृति के अनुसार धर्म एक ही है और वह सनातन है। भारत के बाहर और भारत के भीतर भी धर्म का न तो कोई समानार्थी शब्द है और न ही इसे किसी परिभाषा में आबद्ध किया जा सकता है। धर्म का प्रकटीकरण केवल जीवन-मूल्यों से हो सकता है। सबसे निर्बल जो है उसकी उत्तरजीविता सुनिश्चित होना ही धर्म है। उन्होंने कहा कि हम भारतीय ही है, जो शुभ-लाभ को धर्मानुकूल मानते हैं, न कि लाभ-शुभ को। यह सनातन धर्म ही है, जो जग को 'केवलाधी भवति केवलादी' जैसा आचरण का शाश्वत नियम देता है कि अकेला खाने वाला पापी होता है। आसुरी शक्तियों का यह स्वभाव होता है कि वे केवल और केवल अपना लाभ देखती है। इन शक्तियों के पास आचरण का कोई कल्याणकारी नियम नहीं होता, इसलिए उनका काम उस दर्शन का खण्डन करना ही रह जाता है, जो हमारे लोक-परलोक में हमारे कल्याण, हमारी मुक्ति की बात करता है। 10 जून को ही अपराह्न सम्पन्न हुए बौद्धिक सत्र में 'प्रज्ञा प्रवाह' के राष्ट्रीय संयोजक श्री जे. नंदकुमार जी ने कम्युनिज्म के इतिहास की पृष्ठभूमि रखते हुए, उसके बदलते स्वरूप, साहित्य एवं क्रियाकलापों के अनेक उदाहरण प्रस्तुत करते हुए देश को तोड़ने वाली ताकतों के विरुद्ध एकजुट होने का आह्वान किया। रात्रि सत्र में केरल में राष्ट्रवादी लोगों पर कम्यूनिस्टों द्वारा हो रहे अत्याचारों से संबंधित लघु फिल्में दिखाई गई। नंदकुमारजी ने वहाँ के भयावह वातावरण को बदलने के लिए सोशल मीडिया व अन्य बौद्धिक साधनों के प्रयोग में राष्ट्रीय विचार के शिक्षकों की भूमिका स्पष्ट की।

11 जून को प्रातः पैसिफिक यूनिवर्सिटी, उदयपुर के कुलपति प्रो. भगवती प्रकाश शर्माजी ने 'नियो-कम्युनिज्म' शीर्षक के अंतर्गत प्रतिभागियों के समक्ष विखंडनकारी ताकतों के वे सब आवरण उतार फैंके, जिनके पीछे अपना शरीर छुपाकर वे दुनिया में स्वयं को जीवित रखने की कोशिश कर रहे हैं। नए रूप में वे दिखावे के लिए खुले दिमाग का होने का अभिनय करते हैं, लेकिन भीतर से वे उतने ही बंद दिमाग के होते हैं, जितने अब तक होते आए हैं। वे नई-नई सामाजिक संस्थाएँ बनाते हैं और उनके नाम ऐसे रखते हैं, जैसे वे समाज में कोई सांस्कृतिक परिवर्तन करने जा रहे हो या इसके पीछे उनका कोई लोक-कल्याणकारी उद्देश्य हो। भोले-भाले लोग इनकी संस्थाओं, विशेषकर एनजीओ – जिन्हें विध्वंसक ताकतों द्वारा अच्छी आर्थिक सहायता मिलती है, से जुड़ जाते हैं। उन्होंने इस संबंध में जागरुक रहकर राष्ट्रहित में कार्य करने का आह्वान किया।

11 जून को अपराह्न सम्पन्न हुए समारोप सत्र में श्री जे. नंदकुमारजी ने विभिन्न दृष्टांतों के माध्यम से प्रतिपादित किया कि

किसी के भी जीवन का सफल होना उसके जीवन का सार्थक होना नहीं है। सफल होना आपकी निजता तक सीमित होता है, जबकि सार्थक होना निजता से मुक्त होकर सभी के कल्याण की दिशा में आगे बढ़ना होता है। उन्होंने कहा कि स्वरों का प्रयोग किये बिना कोई व्यंजनों से अर्थ प्रकट करने वाला वाक्य रच दे, यह हो नहीं सकता। जिस प्रकार स्वरों के बिना वाक्य विन्यास नहीं हो सकता, उसी प्रकार सत्कर्मों के बिना जीवन की रचना नहीं हो सकती। हमारे देश के नाम 'भारत' का अर्थ भी हमें ज्ञान अथवा प्रकाश की दिशा में आगे बढ़ने की प्रेरणा देता है। वर्तमान कालखण्ड में प्रकाश की दिशा में आगे बढ़ने का यह स्पष्ट कारण हमारे समक्ष विद्यमान है कि देश इस समय बौद्धिक आतंकवाद का शिकार हो रहा है। हमें इससे मुक्त होना है। उन्होंने स्पष्ट किया कि मटेरियलिज्म और कैपिटिलिज्म, ये दोनों ही सिद्धांत यांत्रिकता पर आधारित हैं और व्यवहार में कभी सार्थक सिद्ध नहीं हो सकते। अगर उत्पादन ही इतिहास का आधार होता, तो इतिहास में मूल्य रह ही नहीं जाते। इन दोनों ही सिद्धान्तों से ऊब चुकी दुनिया बड़ी आशा से भारत की ओर देख रही है। हमें, विशेषत: शिक्षक साथियों को, दुनिया का नेतृत्व करते हुए अत्यन्त संयम और कौशल से विश्व-कल्याण के लक्ष्य की सिद्धि करनी होगी।

विचार-वर्ग में इन चार आधारभूत व्याख्यानों के समय विद्वानों का प्रतिभागियों से फलदायी संवाद तो हुआ ही, इसके अतिरिक्त संवाद को अधिक सार्थक बनाने के लिए संगठन के तीनों संभागों - जयपुर, जोधपुर और चित्तौड़ की चक्रीय बैठकें भी सम्पन्न हुई। चक्रीय बैठकों में विद्वानों ने राष्ट्रवाद, अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और वर्तमान में समाज के समक्ष चुनौतियाँ जैसे उद्वेलित करने वाले विषयों पर प्रतिभागियों से युक्तियुक्त संवाद किया। वर्ग में अखिल भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. विमल प्रसादजी अग्रवाल, राष्ट्रीय महामंत्री श्री जगदीश प्रसादजी सिंघल, राष्ट्रीय संगठन मंत्री श्री महेन्द्रजी कपूर की विशेष उपस्थिति रही।

2. **विस्तृत कार्यकारिणी बैठक सम्पन्न** - संगठन की विस्तृत कार्यकारिणी बैठक 9 जून 2017 को महर्षि दयानंद सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर में संगठन अध्यक्ष डॉ. दिग्विजयसिंह की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। सामूहिक सरस्वती वंदना के साथ बैठक का प्रारम्भ हुआ। सर्वप्रथम महामंत्री ने गत बैठक का कार्यवाही विवरण प्रस्तुत किया जिसे सर्वसम्मति से अनुमोदित किया गया। इसके बाद गत बैठक के पश्चात् संगठन की गतिविधियों एवं उपलब्धियों का ब्यौरा प्रस्तुत किया गया। 29 मार्च व 8 मई को उच्च शिक्षा मंत्री से भेंट की जानकारी देते हुए महामंत्री ने बताया कि विभिन्न शिक्षक समस्याओं पर विस्तार से शिक्षकों का पक्ष संगठन द्वारा रखा गया है तथा मंत्रीजी द्वारा समाधान हेतु निर्देश अधिकारियों को दिये गए हैं। सदन को यह भी जानकारी दी गई कि संगठन के प्रयासों से रिव्यू डीपीसी के आधार पर विभिन्न स्नातकोत्तर, स्नातक प्राचार्यों व डीपीसी की सूची के शेष उपप्राचार्यों की नियुक्ति हुई है। इसी प्रकार कुलपति पद की योग्यता हेतु विधानसभा में पारित एक्ट में संगठन की जागरुकता एवं प्रयासों के चलते कॉलेज प्रोफेसर शब्द जोड़ा गया है एवं रिक्त होने की दशा में कार्यभार शिक्षाविद् को देने का प्रावधान हुआ है। महामंत्री ने ये भी बताया कि मुख्यमंत्री ने पदनाम परिवर्तन के प्रारूप को मंजूरी दे दी है तथा महाविद्यालयों में 477 प्रोफेसर पदों हेतु वित्तीय स्वीकृति प्राप्त हो गई है। इसके बाद सदस्यों द्वारा अन्य विभिन्न लम्बित शिक्षक समस्याओं को प्रस्तुत किया गया। महामंत्री ने समस्याओं से संबंधित संगठन के प्रयासों की जानकारी से सदस्यों को अवगत कराते हुए नवीन समस्याओं पर शिक्षकों का पक्ष शासन के समक्ष रखने का विश्वास दिलाया।

इसके पश्चात् अखिल भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ के महामंत्री श्री जे.पी. सिंघलजी ने महासंघ की गतिविधियों एवं उपलब्धियों की जानकारी दी। उन्होंने महासंघ के प्रतिनिधिमंडल की मानव संसाधन विकास मंत्री श्री प्रकाश जावडेकरजी से हुई भेंट की विस्तृत जानकारी देते हुए बताया कि शिक्षा एवं शिक्षकों की विभिन्न समस्याओं के समाधान हेतु चरणबद्ध रूप से कार्य करने पर सहमति बनी है तथा इस हेतु जावडेकरजी ने बैठक में उपस्थित अधिकारियों को समुचित निर्देश प्रदान किए है। राष्ट्रीय महामंत्री ने यह भी बताया कि यू.जी.सी. द्वारा स्वीकृत शोध जर्नल्स की सूची को महासंघ के प्रयासों से विस्तार दिया गया है। महासंघ का यह भी प्रयास है कि जर्नल्स की केटेगरी के अनुसार पॉइन्ट्स में कोई अंतर न रखा जाए।

बैठक के अगले सत्र में संगठन द्वारा परिसर संस्कृति के विकास पर गंभीर मंथन किया गया। बैठक में यह तथ्य उभर कर आए कि संगठन के कई कार्यकर्ता वैयक्तिक रूप से एवं अन्य शिक्षक साथियों को साथ लेकर अपने संस्थान के परिसर विकास में उत्तम कार्य कर रहे हैं। इनमें परिसर में ट्री गार्ड सहित पौधारोपण, कचरा पात्र लगाने, पुस्तकालय की पुस्तकों का रखरखाव,

दीवारों का रंग-रोगन, जी.आई.एस. का विकास, प्लास्टिक मुक्त एवं पोस्टर मुक्त परिसर बनाने, गरीब बच्चों को वस्त्र वितरण करने, सौर पैनल लगवाने, पानी कूलर व पंखे लगवाने, पूर्व छात्रों की सहायता से सभागृह व कक्षाओं का निर्माण, गार्डन में शिक्षकों के सहयोग से बेंच लगाने, विभिन्न विषयों में अतिरिक्त कक्षाएँ लगाने व नि:शुल्क कोचिंग व्यवस्था करने जैसे कार्य संगठन के कार्यकर्ताओं की सक्रियता से हुए हैं। संगठन मंत्री डॉ. ग्यारसीलाल जाट ने इस प्रकार के वैयक्तिक एवं सामूहिक प्रयासों को और अधिक मात्रा में करने की आवश्यकता जताते हुए संगठन के नाते **एक शिक्षक एक वृक्ष** अभियान लेने का प्रस्ताव रखा। इस प्रस्ताव को सदन ने सर्वसम्मति से स्वीकार करते हुए विभागश: लक्ष्य तय किये तथा अगले वर्ष इन वृक्षों का जन्मदिन मनाना तय किया।

इसके बाद सत्र 2017-18 के सदस्यता अभियान पर चर्चा हुई। यह तय किया गया कि पिछले वर्ष की भांति इस वर्ष भी 1 जुलाई को अधिकतम सदस्यता दिवस व सदस्यता अभियान 15 जुलाई तक रहेगा। कार्यकारिणी ने यह भी सर्वसम्मति से निर्णय लिया कि वर्ष 2017-18 से उच्च शिक्षा के तकनीकी, संस्कृत व अन्य क्षेत्रों में भी सदस्यता प्रारम्भ की जाए। शैक्षिक मंथन पत्रिका की सदस्यता हेतु इस वर्ष शेष रहे अधिकतम शिक्षकों को आजीवन सदस्य बनाने का भी निर्णय लिया गया तथा विभागश: सदस्य बनाने हेतु कार्यकर्त्ताओं को जिम्मा दिया गया। सदन ने भारत सरकार द्वारा श्री जे. पी. सिंघलजी को प्रतिष्ठित पं. मदन मोहन मालवीय पुरस्कार से सम्मानित करने पर उनका करतल ध्वनि से अभिनंदन किया।

अखिल भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ के अध्यक्ष डॉ. विमल प्रसादजी अग्रवाल ने अखिल भारतीय विस्तारक योजना की जानकारी देते हुए आह्वान किया कि संगठन का व्याप बढ़ाने एवं कार्य के दृढ़ीकरण हेतु कार्यकर्ता का समय लगना बहुत आवश्यक है। उन्होंने कार्यकर्ताओं से 7 से 15 दिन तक अपने केन्द्र को छोड़कर अन्य स्थान पर विस्तारक निकलने का आह्वान करते हुए सामूहिक योजना बनाने की बात कही। संगठन अध्यक्ष डॉ. दिग्विजयसिंह ने व्यापक शिक्षा, शिक्षक एवं समाजहित में परस्पर भातृभाव से कार्य करने का आह्वान किया।

अन्त में गत बैठक के पश्चात परम तत्व में लीन शिक्षक साथी मा. मुकुन्द राव जी कुलकर्णी, श्री पी. चन्द्रशेखरजी, प्रो. जे. पी. वर्मा, डॉ. ए. के. पाठक एवं डॉ. विद्यासागर शर्मा को श्रद्धांजलि दी गई एवं उनकी आत्मा की शांति हेतु प्रार्थना की गई। सामूहिक कल्याण मंत्र के साथ बैठक सम्पन्न हुई।

3. **राष्ट्रीय कार्यकारिणी बैठक शिमला में सम्पन्न** - अखिल भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ की राष्ट्रीय कार्यकारिणी बैठक संगठन अध्यक्ष डॉ. विमल प्रसादजी अग्रवाल की अध्यक्षता में 27 व 28 मई 2017 को शिमला (हिमाचल प्रदेश) में सम्पन्न हुई। बैठक के उद्घाटन सत्र में मुख्य अतिथि हिमाचल प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री प्रो. प्रेम कुमार धूमल ने महासंघ द्वारा शिक्षा क्षेत्र में किये जाने वाले कार्यों की सराहना करते हुए सरकारी नौकरी करने वाले कर्मचारियों एवं अधिकारियों को अपने बच्चे सरकारी स्कूलों में ही अनिवार्य तौर पर पढ़ाने की आवश्यकता व्यक्त की। उन्होंने कहा कि प्राथमिक कक्षा तक शिक्षा मातृभाषा में दी जाये तभी देश का भला होगा। बैठक में देश भर से आये शिक्षक संगठनों के प्रतिनिधियों ने जहाँ अपने द्वारा सम्पन्न कार्यक्रमों का लेखा-जोखा दिया वहीं आगे सम्पन्न किये जाने वाले कार्यक्रमों की योजना भी बनाई। 29 एवं 30 जुलाई 2017 को दिल्ली में सम्पन्न होने वाले उच्च शिक्षा सम्मेलन की योजना को अन्तिम रूप दिया गया। भारत में उच्च शिक्षा का परिदृश्य विषय पर होने वाले सम्मेलन में देश भर के 500 से अधिक शिक्षाविदों के भाग लेने की संभावना है। यह भी निश्चय किया गया कि 10 सितम्बर 2017 को बेंगलुरु में शिक्षक सम्मान कार्यक्रम सम्पन्न होगा जिसमें शिक्षा क्षेत्र में असाधारण कार्य करने वाले तीन महानुभावों को अखिल भारतीय शिक्षा भूषण सम्मान से सम्मानित किया जायेगा। महासंघ के कार्यविस्तार योजना के अन्तर्गत पूर्णकालिकों के नाम सूचिबद्ध करने का आह्वान सभी सम्बद्ध संगठनों से किया गया एवं उनकी एक बैठक अगस्त माह में आगरा में आयोजित करने की योजना बनाई गई। शाश्वत जीवन मूल्य जनजागरण अभियान को नीचे तक ले जाने के लिए सभी ने अपने संकल्प को दोहराया। शिक्षकों की समस्याओं पर विचार विमर्श करते हुए महामंत्री श्री जे.पी. सिंघलजी ने बताया कि उच्च शिक्षा में कार्यरत शिक्षकों के लिए सातवें यू.जी.सी. वेतनमानों को तुरन्त लागू करने के लिए महासंघ के प्रतिनिधिमंडल की मानव संसाधन विकास मंत्री श्री प्रकाश जावडेकरजी से विस्तृत भेंटवार्ता हुई है। मंत्रीजी ने शीघ्र ही नवीन वेतनमानों को लागू करने का विश्वास दिलाया है। प्रतिनिधि मंडल द्वारा 20 सूत्रीय माँग पत्र पर मंत्री महोदय तथा अधिकारियों के समक्ष महासंघ के पक्ष की जानकारी सदस्यों को प्रदान की गई। अनेक विषयों पर मंत्री महोदय द्वारा

सकारात्मक निर्णय करने के लिए आश्वस्त किया गया, जिसकी जानकारी विस्तार से महासंघ के सदस्यों के समक्ष रखी गई। समारोप सत्र में बैठक में उपस्थित कार्यकर्ताओं का प्रबोधन करते हुए राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के अखिल भारतीय सम्पर्क प्रमुख प्रो. अनिरुद्ध देशपाण्डे जी ने कहा कि सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के वैचारिक अधिष्ठान को नष्ट करने के उद्देश्य से गैर राष्ट्रवादी शक्तियाँ राष्ट्र के मानचिह्नों पर चोट कर राष्ट्रीयता को खण्डित करने का प्रयास कर रही हैं। ये लोग सामाजिकता का मुखौटा लगाकर देश तोड़ने एवं समाज में विभेद पैदा करने का षड़यंत्र कर रहे हैं और ऐसे अनेक लोग हमारे देश की शिक्षण संस्थाओं में है। महासंघ से जुड़े हुए शिक्षकों को इस दुष्चक्र को नष्ट करने के लिए बौद्धिक योद्धा बनने एवं बनाने की आवश्यकता है। सामूहिक कल्याण मंत्र के साथ बैठक सम्पन्न हुई। बैठक में रुक्टा (राष्ट्रीय) की ओर से महामंत्री, अध्यक्ष डॉ. दिग्विजयसिंह शेखावत, सहसंगठन मंत्री डॉ. सुशील कुमार बिस्सु एवं डॉ. दीपक कुमार शर्मा सहित छह सदस्यों ने भाग लिया।

4. **'सवा लाख से एक लडाऊँ' पुस्तक का विमोचन** – ''राष्ट्रहित में शिक्षा, शिक्षा हित में शिक्षक एवं शिक्षक हित में समाज'' के मंत्र को लेकर सम्पूर्ण भारत के शैक्षिक जगत में राष्ट्रीय भाव से कार्यरत अखिल भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ शिक्षा एवं शिक्षकों की समस्याओं पर संघर्ष करने के साथ-साथ शैक्षिक नवाचारों एवं समाज प्रबोधन के कार्य में निरन्तर संलग्न है। इसी श्रृंखला में गुरु गोविन्द सिंहजी के 350 वें प्रकाश उत्सव पर शैक्षिक महासंघ द्वारा प्रकाशित ''सवा लाख से एक लड़ाऊँ'' पुस्तक विमोचन का आयोजन 5 मई 2017 को इन्द्रलोक सभागार, जयपुर में किया गया।

कार्यक्रम के मुख्य वक्ता शैक्षिक प्रौद्योगिकी विभाग के अनुसंधान अधिकारी एवं पुस्तक लेखक श्री हनुमान सिंह राठौड़ ने गुरु गोविन्द सिंहजी के जीवन पर प्रकाश डालते हुए बताया कि उन्होंने भारतीय समाज को एकता के सूत्र में पिरोने एवं छुआछूत जैसी विकृतियों को दूर कर धर्म की स्थापना करने में अपना सम्पूर्ण जीवन लगाया। गुरु गोविन्द सिहंजी ने गुरु ग्रन्थ साहिब के माध्यम से व्यक्ति निष्ठा की जगह तत्व निष्ठा की स्थापना का आदर्श प्रस्तुत किया। कार्यक्रम की मुख्य अतिथि राजस्थान सरकार की उच्च शिक्षा मंत्री श्रीमती किरण माहेश्वरी ने गुरु गोविन्द सिंहजी के जीवन से प्रेरणा लेकर देश हित में कार्य करने का आह्वान किया। विशिष्ट अतिथि राजस्थान अल्पसंख्यक आयोग के अध्यक्ष स. जसवीर सिंह ने गुरु गोविन्द सिंहजी के जीवन के अनेक प्रसंग प्रस्तुत करते हुए कहा कि देश एवं धर्म के प्रति प्रतिबद्धता बहुत जरूरी है तभी भारत विश्व गुरु बनेगा। शैक्षिक महासंघ के महामंत्री श्री जे. पी. सिंघल ने संगठन की गतिविधियों पर प्रकाश डालते हुए कहा कि गुरु गोविन्दसिंहजी एक महान संत होने के साथ-साथ एक सैनिक, कवि एवं एक आदर्श योद्धा थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए महासंघ के अध्यक्ष डॉ. विमल प्रसाद अग्रवाल ने बताया कि तीन पीढ़ियों की कुर्बानी करने वाला गुरु गोविन्द सिंहजी का एक मात्र परिवार था। इस अवसर पर राष्ट्रीय संगठन मंत्री श्री महेन्द्र कपूर, म.द.स. विश्वविद्यालय अजमेर के कुलपति प्रो. कैलाश सोडानी, वर्द्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय कोटा के कुलपति प्रो. अशोक शर्मा, पं. दीनदयाल उपाध्याय शेखावटी विश्वविद्यालय सीकर के कुलपति प्रो. बी. एल. शर्मा, म.द.स. विश्वविद्यालय अजमेर के पूर्व कुलपति प्रो. पी. एल. चतुर्वेदी सहित कई गणमान्य व्यक्ति मौजूद रहे। आभार प्रकटीकरण महासंघ के कोषाध्यक्ष श्री बजरंग प्रसाद मजेजी एवं संचालन डॉ. ओम प्रकाश पारीक ने किया।

5. **श्री जे. पी. सिंघलजी पं. मदनमोहन मालवीय पुरस्कार से सम्मानित** – केन्द्रीय हिन्दी संस्थान की अखिल भारतीय हिन्दी सेवा सम्मान योजना के तहत 30 मई 2017 को राष्ट्रपति भवन में आयोजित भव्य सम्मान समारोह में अखिल भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ के महामंत्री एवं रुक्टा (राष्ट्रीय) के पूर्व अध्यक्ष श्री जगदीश प्रसादजी सिंघल को महामहिम राष्ट्रपति श्री प्रणव मुखर्जी द्वारा प्रतिष्ठित पं. मदनमोहन मालवीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया। उन्हें पुरस्कार स्वरूप प्रशस्ति पत्र, शॉल एवं 5 लाख रुपये राशि भेंट की गई। उल्लेखनीय है कि श्री जे. पी. सिंघलजी राजस्थान विश्वविद्यालय के कुलपति, तीन बार राजस्थान विश्वविद्यालय के सिंडीकेट सदस्य, सरकार के प्रतिनिधि व अग्रवाल कॉलेज के प्राचार्य भी रहे हैं। श्री जे. पी. सिंघलजी की हिन्दी भाषा में पहली पुस्तक 'प्रबन्ध' का प्रकाशन 1979 में हुआ। इसी क्रम में हिन्दी भाषा में व्यावसायिक संगठन, औद्योगिक संगठन, विक्रय संवर्द्धन एवं विक्रय प्रबंध, व्यवसाय प्रबंध और प्रबंध की अवधारणाएं जैसी कुल 17 पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। वे विभिन्न विश्वविद्यालयों एवं महाविद्यालयों द्वारा आयोजित अनेक राष्ट्रीय संगोष्ठियों,

कार्यशालाओं, प्रशिक्षणों तथा पुनश्चर्या पाठयक्रमों में अध्यक्ष, विषय विशेषज्ञ एवं कुशल वक्ता के रूप में भागीदारी करते रहे हैं। इसके साथ-साथ वे हरिशचन्द्र माथुर लोक प्रशासन संस्थान, बीमा शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान, बैंक प्रबंधन प्रशिक्षण केन्द्रों के विभिन्न कार्यक्रमों से नियमित रूप से जुड़े रहे हैं। शिक्षा के साथ-साथ उनका अनेक सामाजिक संगठनों में भी सक्रिय योगदान रहा है। संगठन उन्हें बहुत-बहुत बधाई प्रेषित करते हुए उनके दीर्घ, सक्रिय एवं सफल जीवन की कामना करता है।

6. **संगठन के पूर्व अध्यक्ष डॉ. धर्मचन्दजी जैन का सम्मान** - संगठन के मार्गदर्शक एवं पूर्व अध्यक्ष डॉ. धर्मचन्दजी जैन का स्व. सुन्दरसिंह भंडारी ट्रस्ट द्वारा अजमेर में आयोजित भव्य कार्यक्रम में केन्द्रीय वित्त राज्यमंत्री श्री अर्जुन मेघवाल, राज्य के गृहमंत्री श्री गुलाबचन्द कटारिया एवं शिक्षामंत्री श्री वासुदेव देवनानी द्वारा सम्मान किया गया। डॉ. जैन द्वारा संगठन एवं राष्ट्रीय विचार के प्रति निरन्तर नि:स्वार्थ समर्पित भाव से कार्य करने को सभी के लिए अनुकरणीय बताते हुए मंत्रीगण ने उन्हें शॉल, श्रीफल, अभिनंदन पत्र व ग्यारह हजार रुपये की राशि भेंट कर उनका सम्मान किया। संगठन डॉ. धर्मचन्दजी जैन को बहुत-बहुत बधाई एवं शुभकामनाएं प्रेषित करते हुए उनके दीर्घ एवं स्वस्थ्य जीवन की कामना करता है।

संगठन का सदस्यता अभियान जारी है, हर वर्ष की भांति 15 जुलाई तक संगठन की वार्षिक सदस्यता एकत्रित की जानी हैं, आप सब शिक्षक साथियों एवं कार्यकर्ताओं के सक्रिय सहयोग से 1 जुलाई 2017 को एक ही दिन में 4151 शिक्षकों ने संगठन की वार्षिक सदस्यता ग्रहण की है। आप सभी के सहयोग के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त करते हुए विश्वास दिलाता हूँ कि संगठन आप सबकी भावनाओं के अनुरूप शिक्षक समस्याओं के समाधान के लिए कार्य करने हेतु निरन्तर प्रतिबद्ध है।

शिक्षक समस्याओं पर संघर्ष करने के साथ-साथ संगठन निरन्तर रचनात्मक गतिविधियों में भी संलग्न है। इसी कड़ी में प्रदेश कार्यकारिणी के निर्णयानुसार ''एक शिक्षक-एक वृक्ष'' कार्यक्रम हाथ में लिया गया है। प्रकृति के प्रति अपने कर्तव्य को ध्यान में रखते हुए क्लीन-ग्रीन केम्पस बनाने हेतु इस वर्षा ऋतु में न्यूनतम एक वृक्ष अपने हाथ से लगाकर उसके वर्ष भर पालन करने की योजना करने हेतु आपसे करबद्ध आग्रह है।

9 जुलाई को गुरु पूर्णिमा है, भारत की श्रेष्ठ गुरु परम्परा के आलोक में अपने भीतर स्थित गुरुतत्व के प्रकटीकरण हेतु हम सब शिक्षक साथी वैयक्तिक एवं सामूहिक रूप से चिंतन कर अपना कर्म पथ तय करें, इसे आधार बनाकर संगठन पिछले कुछ वर्षों से गुरु वंदन कार्यक्रम आयोजित कर रहा है। इकाईश: आयोजित इन कार्यक्रमों में आपके सक्रिय सहभाग की अपेक्षा है।

गुरु पूर्णिमा, रक्षा बंधन, जन्माष्टमी एवं स्वतंत्रता दिवस की बहुत-बहुत शुभकामनाएं।

भवदीय

(डॉ. नारायणलाल गुप्ता)
[महामंत्री]

20, चित्रकूट कॉलोनी,
माकड़वाली रोड़, अजमेर-305004

अमृत वचन

जिस प्रकार शरीर में हृदय सब अंगों को स्वस्थ रक्त पहुँचाने का कार्य करता है,उसी प्रकार शिक्षा-क्षेत्र, समाज,शासन,कला,साहित्य आदि सभी क्षेत्रों में नवीन प्रतिभाएँ भेजता है। यदि शिक्षा-क्षेत्र द्वारा पहुँचाया गया नवीन रक्त स्वस्थ है,तो सभी क्षेत्र स्वस्थ और क्रियाशील रहते हैं। यदि नवीन रक्त में व्याधियों के कीटाणु प्रवेश कर जाते हैं,तो राष्ट्र-जीवन के सभी क्षेत्र सांघातिक रूप से पीड़ित हो उठते हैं। - महादेवी वर्मा